हिन्दी सान्ध्य दैनिक

जौनपुर से प्रकाशित

देश की उपासना

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

वर्ष : 02 अंक : 57 जौनपुर, बुधवार 22 नवम्बर 2023 सान्ध्य दैनिक (संस्करण) पेज - 4 मूल्य : 2 रूपया

पीएम मोदी ने पिछड़ा वर्ग आगे बढ़ाया, गहलोत सरकार तुष्टिकरण करने का काम कर रही : शाह

एजेन्सी

जयपुर। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने राजस्थान में सत्तारूढ़ कांग्रेस एवं उसकी सरकार को पिछड़ा विरोधी करार देते हुये मंगलवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पिछड़ा वर्ग को आगे बढ़ाने का काम किया है। शाह किशनगढ़ बास में चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा, ''यह कांग्रेस पार्टी...और गहलोत सरकार भी पिछड़ा वर्ग की विरोधी सरकार है। इतने साल तक मंडल आयोग की रिपोर्ट का विरोध कांग्रेस पार्टी ने किया और इतने साल तक कांग्रेस पार्टी ने पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक मान्यता नहीं दी। शाह ने आगे कहा, ... मोदी जी ने पिछड़ा

वर्ग आयोग को संवैधानिक मान्यता दी। केन्द्र की सारी शिक्षा व्यवस्था में नरेन्द्र मोदी सरकार ने सभी जगहों पर पिछड़ा वर्ग को 27 प्रतिशत आरक्षण देने का काम किया। आज नरेन्द्र मोदी सरकार में 27 प्रतिशत मंत्री पिछड़ा वर्ग के हैं और मोदी जी ने पिछड़ा वर्ग को आगे बढ़ाने का काम किया है। शाह ने आरोप लगाया कि गहलोत सरकार वोट बैंक के लालच में तुष्टिकरण करने का काम कर रही है। कथित लाल डायरी का जिक्र करते हुए शाह ने कहा, लाल डायरी इनके भ्रष्टाचार के सारे कारनामे हैं। शाह ने कहा कि जो सरकार भ्रष्टाचार में लिप्त हो वो सरकार आपका भला नहीं कर सकती। उन्होंने पेपरलीक प्रकरण को लेकर भी राज्य सरकार पर निशाना साधा और कहा कि भाजपा की सरकार आने पर भ्रष्टाचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। शाह ने आरोप लगाया कि राज्य में तुष्टिकरण चरम सीमा पर है। राज्य में विधानसभा चुनाव के लिए 25 नवंबर को मतदान होगा जबकि वोटों की गिनती तीन दिसंबर को होगी।

राजस्थान में इस बार बदलेगा रिवाज : अल्का लांबा

एजेन्सी

अजमेर। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय प्रवक्ता अल्का लाम्बा ने दावा किया है कि राजस्थान में इस बार रिवाज बदलेगा और मुख्यमंत्री अशोक गहलोत चौथी बार सरकार बनायेंगे। श्री लाम्बा ने आज यहां पत्रकारों से बातचीत में कहा कि राजस्थान भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में दो फाड़ है और कांग्रेस संगठन एकजुटता के साथ संगठित होकर चुनाव लड़ रहा है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि वह डबल इंजन का डी भी नहीं बोल पाते, जहां जहां डबल इंजन सरकार है वहां का क्या हश्र हो रहा है किसी से छीपा नहीं। उन्होंने कहा कि श्री मोदी धर्म के नाम पर वोट मांगने का काम कर रहे हैं जबकि मुख्यमंत्री श्री गहलोत काम के नाम पर वोट मांग रहे है।

हिन्दू-मुस्लिम के बीच में लड़ाई कराने का काम गहलोत सरकार ने किया : जे पी नड्डा

एजेन्सी

जयपुर। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा ने भ्रष्टाचार को लेकर मंगलवार को प्रदेश में सत्तारूढ़ कांग्रेस पर निशाना साधा और कहा कि जहां कांग्रेस रहेगी, वहां भ्रष्टाचार रहेगा। वह सीकर के धोद में चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने आरोप लगाया,''जहां–जहां कांग्रेस रहेगी, वहां–वहां भ्रष्टाचार रहेगा। जहां–जहां कांग्रेस रहेगी, वहां लूट होगी। जहां कांग्रेस होगी, वहां घोटाला, घपला, अत्याचार, व्यभिचार, छलावा और धोखा होगा३ जहां भाजपा का कमल होगा वहां विकास, तरक्की होगी और देश प्रदेश आगे बढ़ेगा।'' उन्होंने राज्य की कांग्रेस सरकार पर धार्मिक ध्रुवीकरण और भाई को भाई से लड़ाने का आरोप लगाया। नड्डा ने कहा,''आज राजस्थान की चर्चा धार्मिक ध्रुवीकरण और भाई को भाई से लड़ाने को लेकर है... हिन्दू–मुस्लिम के बीच में लड़ाई कराने का काम गहलोत सरकार ने किया कि नहीं किया?' भाजपा नेता ने कहा,'' आज राजस्थान की पहचान भ्रष्टाचार के रूप में होती है राजस्थान की चर्चा बहू बेटियों के साथ अत्याचार के लिए होती है किसानों को धोखा देने के लिए होती है दलित भाइयों के साथ अत्याचार के लिए होती है।'' राज्य में विधानसभा चुनाव के लिए 25 नवंबर को मतदान होगा जबकि वोटों की गिनती तीन दिसंबर को होगी।

राजस्थान विधानसभा चुनाव में चालीस से अधिक सीटों पर त्रिकोणीय मुकाबला

एजेन्सी

जयपुर। राजस्थान में राज्य की दो सौ विधानसभा क्षेत्रों में से 199 सीटों पर 25 नवंबर होने वाले विधानसभा आम चुनाव में डेढ़ सौ से अधिक सीटों पर सत्तारुढ़ कांग्रेस एवं भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के बीच सीधा मुकाबला होने के आसार नजर आने लगे हैं वहीं दोनों पार्टियों में बागी उम्मीदवार एवं अन्य दल के प्रत्याशियों की वजह से चालीस से अधिक सीटों पर त्रिकोणीय एवं कुछ स्थानों पर चतुष्कोणीय मुकाबला होने के आसार है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का जोधपुर के सरदारपुरा सीट पर भाजपा प्रत्याशी डा महेन्द्र सिंह राठौड़ से सीधा मुकाबला हैं। इसी तरह पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे का झालरापाटन सीट पर कांग्रेस उम्मीदवार राम लाल चौहान, विधानसभा अध्यक्ष डा सी पी जोशी का नाथद्वारा विधानसभा क्षेत्र में भाजपा उम्मीदवार विश्वराज सिंह मेवाड़, विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र सिंह राठौड़ का चुरु जिले में तारानगर सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी नरेन्द्र बुढ़ानिया, पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट का टोंक सीट पर भाजपा प्रत्याशी अजीत सिंह मेहता एवं कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा का चुनाव पहले भाजपा में शामिल हुए पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुभाष महरिया से सीधा मुकाबला माना जा रहा है। इसी तरह गहलोत सरकार के कई मंत्री जिनमें कोटा उत्तर से शांति धारीवाल, बीकानेर पश्चिम से बी डी कल्ला, लालसोट से परसादी लाल मीणा, सिविल लाइंस से प्रताप सिंह खाचरियावास सहित कई मंत्रियों का भाजपा प्रत्याशियों से सीधा चुनावी मुकाबला हैं। इसके अलावा पूर्व केन्द्रीय मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ का जयपुर के झोंटवाड़ा, सांसद दिया कुमारी का विद्याधरनगर, डा किरोडी लाल मीणा का सवाईमाधोपुर एवं महंत बालकनाथ का तिजारा में कांग्रेस प्रत्याशी के साथ सीधा मुकाबला होने के आसार हैं। इसके अलावा कांग्रेस एवं भाजपा के दर्जनों विधायकों एवं पूर्व विधायकों सहित कई नेताओं के बीच सीधा चुनावी मुकाबला माना जा रहा है। इस बार चुनाव में कांग्रेस एवं भाजपा दोनों ही दलों में दर्जनों की संख्या में बागी उम्मीदवार सामने आये जिनमें दोनों ही दलों ने कई प्रत्याशियों के मनाने में सफल भी रहे और कई बागियों को पार्टी से छह साल के लिए निष्कासित भी कर दिया गया लेकिन उसके बावजूद भी कई बागी चुनाव मैदान में डटे रहने के कारण पार्टी के अधिकृत प्रत्याशियों के लिए समस्या बने हुए हैं और प्रदेश की चालीस से अधिक सीटों पर त्रिकोणीय मुकाबला होने के आसार नजर आ रहे हैं। इनमें गहलोत सरकार के मंत्री सुभाष गर्ग भरतपुर सीट पर भाजपा प्रत्याशी विजय बंसल एवं अन्य प्रत्याशी गिरीश चौधरी के साथ त्रिकोणीय संघर्ष में फंसे हुए हैं। इस बार त्रिकोणीय मुकाबले में सबसे हॉट सीट बनी चित्तौड़गढ़ में मौजूद भाजपा विधायक चन्द्र भान सिंह आक्या पूर्व मंत्री एवं भाजपा उम्मीदवार नरपत सिंह राजवी एवं कांग्रेस के उम्मीदवार सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत के लिए मुश्किल बने हुए हैं। श्री आक्या का टिकट कटने के बाद वह निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हैं और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सी पी जोशी भी सांसद चित्तौड़गढ से ही हैं और चित्तौड़गढ़ उनका गृह जिला होने के बावजूद श्री आक्या के समर्थन में जनसैलाब उमड़ने से सबकी नजर चित्तौड़गढ पर टिकी हुई हैं।

अटेर में एक मतदान केन्द्र पर पुन: मतदान

एजेन्सी

भिण्ड। मध्यप्रदेश के भिण्ड जिले की अटेर विधानसभा क्षेत्र के मतदान क्रमांक 71 माध्यमिक शासकीय भवन किशूपुरा में आज पुनर्मतदान हो रहा है। वोटिंग सुबह सात बजे से शुरू हुई, जो शाम छह बजे तक चलेगी। इस बूथ पर 1223 वोटर हैं। सुबह नौ बजे तक 10 प्रतिशत वोटिंग तथा 11 बजे तक 20 प्रतिशत से अधिक वोटिंग हुई। 17 नवंबर को यहां 89ध प्रतिशत मतदान हुआ था। जिला निर्वाचन अधिकारी संजीव श्रीवास्तव के मुताबिक पहले सुबह साढ़े पांच बजे से मॉकपोल की प्रोसेस हुई। अटेर में भाजपा ने मंत्री अरविंद सिंह भदौरिया को मैदान में उतारा है। कांग्रेस से हेमंत कटारे चुनाव लड़ रहे हैं। कुल 38 प्रत्याशी मैदान में हैं। इनमें 30 निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हैं। राज्य में 17 नवंबर को हुए मतदान के दौरान पोलिंग बूथ में कुछ लोग घुस आए थे। उन्होंने मतदाताओं को धमका कर मतपर्चियां एकत्रित कर मतदान प्रभावित किया था।

पीएम मोदी और सीएम योगी को मिली जान से मारने की धमकी

एजेन्सी

मुंबई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को जान से मारने की धमकी मिली है। दाऊद इब्राहिम गिरोह से जुड़े एक व्यक्ति ने मुंबई पुलिस कंट्रोल रूम को एक धमकी भरा कॉल किया है। इस कॉल में आरोपित शख्स ने दावा किया कि दाऊद गिरोह ने उसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की हत्या की साजिश रचने का निर्देश दिया है। साथ ही जेजे अस्पताल को उड़ाने की धमकी दी। पुलिस ने शख्स पर मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है, जिसकी पहचान कामरान खान नाम से हुई। बता दें कि जेजे अस्पताल महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई के सबसे प्रमुख अस्पतालों में से एक है। पुलिस ने शख्स पर आईपीसी की धारा 505 (2) के तहत केस दर्ज कर लिया गया है, जो विभिन्न धार्मिक, नस्लीय, भाषाई या क्षेत्रीय समूहों या जातियों के बीच दुश्मनी, नफरत या दुर्भावना को बढ़ावा देने वाले बयानों को देने पर लगाया जाता है।

पुलिस ने बयान जारी करते हुए कहा, दाऊद इब्राहिम गैंग का नाम लेकर मुंबई पुलिस कंट्रोल रूम को धमकी भरा कॉल करने के मामले में एक शख्स को गिरफ्तार किया गया है। शख्स का दावा है कि दाऊद गैंग ने उसे पीएम मोदी और यूपी सीएम योगी आदित्यनाथ की हत्या करने को कहा है। कॉल करने वाले शख्स ने जेजे अस्पताल को उड़ाने की धमकी भी दी है। आईपीसी की धारा 505 (2) के तहत केस दर्ज कर लिया गया । अक्टूबर में, मुंबई पुलिस को एक मेल मिला था जिसमें धमकी दी गई कि अगर भारत सरकार 500 करोड़ का भुगतान करने और कुख्यात गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई को रिहा करने में विफल रही तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अहमदाबाद में उनके नाम पर बने स्टेडियम को उड़ा दिया जाएगा। ईमेल में यह भी उल्लेख किया गया है कि आतंकवादी समूह ने हमलों को अंजाम देने के लिए पहले से ही लोगों को तैनात कर दिया था। पुलिस के अनुसार, धमकी भरा मेल शुरू में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) को भेजा गया था, जो स्पष्ट रूप से यूरोप में उत्पन्न हुआ था और संघीय एजेंसी ने मुंबई पुलिस को इसके बारे में सचेत किया था।इससे पहले अगस्त में, केरल पुलिस ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया था जिसने कथित तौर पर राज्य की दो दिवसीय यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी पर आत्मघाती हमले की धमकी वाला पत्र लिखा था। हालांकि, बाद में पता चला कि आरोपी ने अपने पुराने दोस्त और पड़ोसी को फंसाने के लिए पत्र लिखा था।

राजस्थानः कांग्रेस के घोषणापत्र में 10 लाख रोजगार, किसानों को 2 लाख का ब्याज मुक्त लोन का वादा

एजेन्सी

जयपुर। राजस्थान में सत्तारूढ़ कांग्रेस ने आगामी विधानसभा चुनाव के लिए अपना घोषणा पत्र यहां मंगलवार को जारी किया जिसमें उसने किसानों को दो लाख रुपये का ब्याज मुक्त ऋण देने, स्वामीनाथन समिति की सिफारिशों के मुताबिक न्यूनतम समर्थन मूल्य का कानून लाने तथा युवाओं को पांच साल में चार लाख सरकारी नौकरियों सहित दस लाख रोजगार देने का वादा किया है। कांग्रेस ने कहा है कि वह छोटे व्यापारियों, दुकानदारों को पांच लाख रुपये तक का ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध करवाने के लिए व्यापारी क्रेडिट कार्ड योजना शुरू होगी। साथ ही घोषणा पत्र में, प्रदेश में जाति जनगणना करवाने तथा मुफ्त स्वास्थ्य बीमा कवर की राशि बढ़ाकर 50 लाख रुपए करने का भी वादा किया गया है। कांग्रेस ने घोषणा पत्र में कहा है कि राज्य में कांग्रेस की सरकार पुनरू बनने पर चिरंजीवी स्वास्थ्य सुरक्षा बीमा की राशि 25 लाख रुपए से बढ़ाकर 50 लाख रुपए की जाएगी। इसी तरह परिवार की एक महिला सदस्य को साल में 10000 रुपए की सम्मान राशि दी जाएगी। चार लाख युवाओं को सरकारी नौकरी दी जाएगी और पांच साल में कुल 10 लाख युवाओं को रोजगार दिया जाएगा। पंचायत स्तर पर सरकारी नौकरी का नया काडर बनाया जाएगा। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत तथा घोषणा पत्र समिति के अध्यक्ष डॉ सीपी जोशी के साथ यहां कांग्रेस मुख्यालय में यह जन घोषणा पत्र जारी किया। इस अवसर पर खरगे ने राजस्थान को कांग्रेस का मजबूत गढ़ बताते हुए कहा '' हम वही वादे करते हैं जो पूरा कर सकते हैं। पांच साल में हम युवाओं को 10 लाख नौकरियां देंगे। उसमें से चार लाख नौकरियां सरकारी होंगी।श्श उन्होंने विश्वास जताया कि इस बार फिर राज्य में कांग्रेस की सरकार आएगी। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि राजस्थान की अर्थव्यवस्था इस साल के अंत तक 15 लाख करोड़ रुपये की हो जाएगी और 2030 तक इसे 30 लाख करोड़ रुपये तक ले जाने का लक्ष्य रखा गया है। घोषणा पत्र समिति के अध्यक्ष डॉ जोशी ने कहा ''हम 2030 का मिशन लेकर चल रहे हैं, उसे ही घोषणा पत्र का आधार बनाया गया है। एक नया राजस्थान बनाने के लिए 2030 की कल्पना लेकर हम घोषणा पत्र पेश कर रहे हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस घोषणा पत्र के आधार पर जनता कांग्रेस को जनादेश देगी। इससे पहले सोमवार को, राजस्थान के मुख्यमंत्री गहलोत ने आईएएनएस को दिए एक साक्षात्कार में कहा कि सात गारंटी ने उनकी पार्टी के पक्ष में कहानी तय कर दी है और एक बार के लिए कोई सत्ता विरोधी लहर नहीं है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस वैकल्पिक पार्टी सरकार की परंपरा को तोड़ेगी और एक इतिहास रचेगी।उन्होंने कहा कि जब उनके रिपोर्ट–कार्ड की बात आती है तो भाजपा के पास दिखाने के लिए कुछ भी नहीं है, क्योंकि न तो केंद्र सरकार ने राजस्थान के लिए कुछ किया है और न ही पिछली भाजपा सरकार ने कोई बड़ा बदलाव किया है। 200 सदस्यीय विधानसभा के लिए 25 नवंबर को मतदान होना है और उसके बाद 3 दिसंबर को वोटों की गिनती होगी। कांग्रेस राज्य में लगातार दूसरे कार्यकाल पर नजर गड़ाए हुए है, जहां पिछले तीन दशकों से वैकल्पिक पार्टी सरकार की परंपरा रही है।

19 साल बाद कोर्ट ने 3 सगे भाइयों को सुनाई आजीवन कारावास की सजा

एजेन्सी

प्रतापगढ़। जिले की एक विशेष अदालत ने करीब 19 वर्ष पूर्व दोहरे हत्याकांड के एक मामले में 3 सगे भाइयों को दोषी करार देते हुए उन्हें उम्रकैद की सजा सुनाई और तीनों पर 5–5 हजार रुपये का अर्थदंड लगाया। अभियोजन पक्ष के अपर जिला शासकीय अधिवक्ता (एडीजीसी) काशीनाथ तिवारी ने मंगलवार को बताया कि अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश (त्वरित अदालत)–प्रथम सुमित पवार की अदालत ने सोमवार को दोहरे हत्याकांड के मामले की सुनवाई करते हुए दोषी पाए गए 3 सगे भाइयों नन्हेलाल, लाल बहादुर व संतोष को आजीवन कारावास व 5–5 हजार रुपए अर्थदंड की सजा सुनाई। घटना का ब्यौरा देते हुए उन्होंने बताया कि जिले के थाना आसपुर देवसरा में मामला दर्ज कराया गया था। सूत्रों से मिली जानकारी के

मुताबिक, राजेंद्र प्रसाद वर्मा ने दर्ज कराई गई प्राथमिकी में यह आरोप लगाया था कि उसके पड़ोसी नन्हेलाल, लाल बहादुर व संतोष का घर पास–पास स्थित है, लेकिन दोनों घरों के बीच में कुछ जगह छूटी है, जिसमें नन्हेलाल आदि ने छप्पर रख लिया था। वर्मा ने कहा कि उसके पिता मोतीलाल वर्मा व चाचा देवनरायण वर्मा ने 11, मई 2004 को छप्पर हटवा दिया था। उन्होंने बताया कि उक्त मामले को लेकर कहासुनी पर उसी रात 10 बजे नन्हेलाल और उसके भाईयों ने उनके पिता व चाचा को लाठी–डंडे से पीटकर गंभीर रूप घायल कर दिया। उन्होंने बताया कि घायलों को उपचार के लिए पट्टी चिकित्सालय ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने दोनों की स्थित गंभीर देखते हुए उन्हें जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया। जिला चिकित्सालय के चिकित्सकों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया।

दिल्ली की वायु गुणवत्ता अब भी बहुत खराब में बरकरार

एजेन्सी

नयी दिल्ली। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार, दिल्ली में समग्र वायु गुणवत्ता मंगलवार को भी बहुत खराब श्रेणी में बनी हुई है। राष्ट्रीय राजधानी में आनंद विहार पीएम 2.5 401 और पीएम 10 414 के साथ गंभीर श्रेणी में पहुंच गया, जबकि सीओ गिरकर मध्यम श्रेणी में 103 पर पहुंच गया। शून्य और 50 के बीच एक्यूआई को अच्छा

माना जाता है, 51 और 100 के बीच संतोषजनक, 101 और 200 के बीच मध्यम, 201 और 300 के बीच खराब, 301 और 400 के बीच बहुत खराब और 401 और 500 के बीच गंभीर माना जाता है।

बवाना स्टेशन पर पीएम 2.5, 452 और पीएम 10, 404 दर्ज किया गया, दोनों श्गंभीरश श्रेणी में हैं, जबकि सीओ 88 (संतोषजनक) तक पहुंच गया।

शिवराज ने बुलाई खाद्य वितरण समीक्षा की बैठक

एजेन्सी/भोपाल। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आज खाद्य वितरण समीक्षा की महत्वपूर्ण बैठक बुलाई है। आधिकारिक जानकारी के अनुसार ये बैठक दोपहर 1 बजे स्थानीय मंत्रालय वल्लभ भवन में होगी।

इनकम टैक्स असेसमेंट केस, गांधी परिवार और आप की याचिका पर 28 नवंबर को अगली सुनवाई

एजेन्सी

नयी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट इनकम टैक्स असेसमेंट केस में गांधी परिवार और आप की याचिका पर अगली सुनवाई 28 नवंबर को करेगा। राहुल गांधी, सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा, आम आदमी पार्टी (आप) और कई धर्मार्थ ट्रस्टों ने आयकर असेसमेंट को इनकम टैक्स के केंद्रीय सर्किल में ट्रांसफर करने के फैसले को चुनौती दी थी। न्यायमूर्ति खन्ना और न्यायमूर्ति एस.एन.वी. भट्टी की पीठ ने सुनवाई 28 नवंबर तक के लिए स्थगित कर दी है। 3 अक्टूबर को ट्रांसफर के खिलाफ कांग्रेस नेताओं राहुल गांधी, सोनिया गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा द्वारा दायर याचिकाओं का जिक्र करते हुए शीर्ष अदालत ने कहा कि यदि व्यक्तियों के बीच क्रॉस–लेनदेन होता है तो केंद्रीय मूल्यांकन की आवश्यकता हो सकती है। गांधी परिवार और उनसे जुड़े ट्रस्टों की ओर से पेश वरिष्ठ वकील अरविंद दातार ने कहा कि भगोड़े हथियार डीलर संजय भंडारी मामले में तलाशी के कारण आईटी अधिकारियों ने प्रियंका गांधी के पति रॉबर्ट वाड्रा के कारण इन सभी को पूरक मामलों के रूप में टैग किया है। गांधी परिवार ने कहा है कि भंडारी समूह के मामलों से उनका कोई लेना–देना नहीं है और उनके मामलों में तलाशी या जब्ती की कोई घटना नहीं हुई है। भंडारी भारत में भ्रष्टाचार और मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप में वांछित है। वह कथित तौर पर लंदन स्थित एक फ्लैट को लेकर रॉबर्ट वाड्रा से जुड़े हुए हैं। हालांकि, रॉबर्ट वाड्रा ने भंडारी के साथ किसी भी व्यापारिक सौदे से इनकार किया है।

सम्पादकीय

दवा के दर्द

यह किसी लोकतांत्रिक व्यवस्था में व्यथित करने वाली स्थिति है कि जिन जनसरोकारों से जुड़े मुद्दों को सरकार को प्राथमिकता के आधार पर संवदेनशील ढंग से सुलझाना चाहिए, उन पर कोर्ट को पहल करनी पड़ रही है। ऐसे तमाम मुद्दों के साथ अब ऑनलाइन दवा बिक्री का मुद्दा भी जुड़ गया है। दिल्ली हाईकोर्ट ने बुधवार को केंद्र सरकार को सख्त लहजे में कहा कि सरकार के लिये यह आखिरी मौका है। वह आठ हफ्ते के बीच ऑनलाइन दवा बिक्री नीति बनाए। लंबे समय से मुद्दा लटकाने से क्षुब्ध कोर्ट ने चेताया कि यदि सरकार ने नीति समय पर नहीं बनायी तो इस विभाग को देख रहे संयुक्त सचिव को आगामी चार मार्च को अदालत में जवाब देने आना पड़ेगा। दिल्ली हाईकोर्ट में कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन और न्यायमूर्ति मिनी पुष्करणा की पीठ ने नाराजगी जतायी कि इस नीति को बनाने के लिये सरकार के पास पर्याप्त समय था, लेकिन सरकार ने मुद्दे की गंभीरता को नहीं समझा। पांच साल का वक्त किसी नीति के निर्धारण के लिये पर्याप्त होता है। दरअसल, सरकार के रवैये से खिन्न अदालत ने केंद्र को सख्त हिदायत दी कि वह आखिरी मौके के रूप में सिर्फ आठ सप्ताह में नीति को अंतिम रूप दे। उल्लेखनीय है कि इससे पहले दिल्ली हाईकोर्ट ने उन याचिकाओं के बाबत जवाब मांगा था, जो ऑनलाइन बेची जा रही दवाओं की बिक्री पर रोक लगाने के बाबत दायर की गई थीं। याचिकाकर्ताओं का आरोप था कि ऑनलाइन दवाओं की बिक्री कानूनों का गंभीर उल्लंघन है। साथ ही यह भी कि ये दवाइयां बिना किसी उचित नियमन के ऑनलाइन बेची जा रही हैं। लेकिन लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की अनदेखी की जा रही है। याचिकाकर्ताओं में शामिल साउथ केमिस्ट एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स एसोसिएशन की मांग थी कि हाईकोर्ट के आदेश के बाद भी दवाइयों की बिक्री पर रोक न लगाने पर ई–फार्मेसी कंपनियों के खिलाफ अवमानना के कानून के तहत कार्रवाई की जानी चाहिए। दरअसल, इससे पहले अगस्त में कोर्ट द्वारा पूछे जाने पर केंद्र सरकार ने दलील दी थी कि इस विषय पर नियमों के मसौदे पर फिलहाल विचार–विमर्श जारी है। उल्लेखनीय है कि तब मुख्य न्यायाधीश सतीश चंद्र शर्मा व न्यायमूर्ति संजीव नरूला की पीठ ने अंतरिम निर्देश देते हुए कहा था कि बिना वैध लाइसेंस ऑनलाइन दवाएं बेचने पर रोक के बाबत कोर्ट के 12 दिसंबर, 2018 के आदेश का उल्लंघन करने वालों पर केंद्र व राज्य सरकारें अगली सुनवाई से पहले आवश्यक कानूनी कार्रवाई करें। तब भी कोर्ट ने वास्तविक स्थिति पर रिपोर्ट पेश करने के लिये केंद्र सरकार से कहा था। दरअसल, याचिका दायर करने वालों ने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के नियमों के मसौदे को चुनौती दी थी कि जिनके जरिये औषधि एवं सौंदर्य प्रसाधन नियमों में संशोधन किये जा रहे हैं। तब ऑनलाइन दवाओं की बिक्री से मरीजों की सेहत के लिये उत्पन्न खतरे की अनदेखी का भी आरोप लगा था। वहीं दूसरी ओर विगत में अदालत की कार्यवाही में सुनवाई के दौरान ऑनलाइन विक्रेताओं ने दलील दी थी कि उन्हें दवाएं बेचने के लिये लाइसेंस की जरूरत नहीं है। वे तो केवल खाने की डिलीवरी करने वाले एप की तरह दवाएं डिलीवरी कर रहे हैं। जिस तरह उन एप्स को चलाने के लिये रेस्तरां के लिये लाइसेंस की जरूरत नहीं होती, वैसे ही ई–फार्मेसी को भी ग्राहकों तक दवाइयां पहुंचाने के लिये लाइसेंस लेने की जरूरत नहीं होनी चाहिए। निस्संदेह, ऐसे किसी तर्क से सहमत होना कठिन है क्योंकि दवा की बिक्री से किसी के जीवन–मरण का प्रश्न जुड़ा है। जिसकी जवाबदेही तय हो। निश्चित रूप से सरकार की नजर ऐसी वेबसाइटों पर होनी चाहिए जो ऑनलाइन दवा बिक्री के धंधे से जुड़ी हैं। दरअसल, ऑनलाइन दवा बेचने वाली कंपनियां ग्राहकों को भारी छूट भी देती हैं, जिसके चलते दुकानदार उनके खिलाफ आवाज बुलंद कर रहे हैं। उनकी मांग है कि ऐसी वेबसाइटों को इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी एक्ट 2000 के नियमों का पालन करने के लिये बाध्य करें। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2016 में ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया ने दवाइयों की ऑनलाइन बिक्री पर अस्थाई प्रतिबंध लगाया था।

समाज में बढ़ती दरिंदगी चिंताजनक

सुधाकर आशावादी

उचित संस्कारों के अभाव में ऐसी पीढ़ी तैयार हो रही है, जो केवल भौतिकता में विश्वास रखती है। मानवीय मूल्य जिसके लिए कोई महत्व नहीं रखते। यही कारण है कि देश मे दरिंदगीपूर्ण वारदातें अपनी सीमाएं पार कर रही है और समाज मूकदर्शक बनकर चुप्पी साधने का अभ्यस्त हो रहा है। यदि ऐसा न होता, तो नित्य ही ऐसे समाचार प्रकाश में नहीं आते, कि किसी युवती को बरेली में रेल पटरी पर फेंक दिया गया, जहाँ उसके अंग भंग हो गए। किन्ही बालिकाओं को झूला झुलाने के बहाने जंगल मे ले जाया गया, फिर उनके साथ दरिंदगी की गई। नित्य ही ऐसी घटनाओं में वृद्धि होना केवल पुलिस और कानून व्यवस्था की खामियाँ ही नहीं गिनाता, अपितु समाज में आ रहे नकारात्मक बदलाव को भी व्यक्त करता है। कटु एवं व्यवहारिक सत्य यही है कि आपराधिक प्रवृत्ति के दरिन्दों को यदि समय से कठोर दण्ड न दिया जाए, तो दरिंदों की क्रूरता बढ़ जाती है। दिल्ली के महिपालपुर में एक रात को कैब बुक कराई गई तथा कैब चालक बिजेंद्र शाह को बंधक बनाकर कार लूट ली गई तथा कैब चालक को एन. एच–8 पर कार से बाहर फेंक दिया गया। कैब चालक का हाथ गाड़ी में फंसा रह गया, दरिंदों ने उसे करीब आधा किलोमीटर तक सड़क पर घसीटा, जिस कारण उसकी मौत हो गई। कैब चालक के साथ दरिंदगी की वारदात ने कैब चालकों की सवारियों के प्रति विश्वसनीयता को संदेह के घेरे में खड़ा कर दिया है। भले ही कार लुटेरे दरिंदों को गिरफ्तार करके उनकी हिस्ट्रीशीट खंगाल दी गई हो, मगर इस बेखौफ दरिंदगी ने अपराधियों के बुलंद हौसलों की तस्वीर प्रस्तुत कर दी है, जो काफी भयावह है। ऐसे में आम आदमी की यात्रा को सुगम बनाने वाली कैब व्यवस्था के सम्मुख यह प्रश्न खड़ा हो सकता हैं कि वह यात्रियों पर विश्वास कैसे करे ? यहां विचारणीय प्रश्न यह भी है कि बात बात में कानून व्यवस्था पर अंगुली उठाने वाले समाज के इन आपराधिक चरित्रों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई हेतु आवाज बुलंद क्यों नही करते। दरिंदे कभी दिल्ली की भीड़भाड़ वाली सड़क पर किसी साक्षी का बेरहमी से कत्ल कर देते हैं, कभी किसी की बोटी बोटी काटकर फ्रिज में रख देते हैं। कभी कोई भाभी अपने प्रेमी के साथ मिलकर अनैतिक सम्बन्धों में विघ्न डाल रही अपनी ननद की हत्या करा देती है। जघन्य दरिंदगी की नित नई कथाएँ प्रकाश में आती रहती हैं । कुछ दिनों तक यह दरिंदगी चर्चा में रहती हैं, किंतु दरिंदों को समयानुसार दंडित न किए जाने के कारण ही समाज में दरिंदगी की घटनाओं की पुनरावृत्ति होती रहती है। समय की मांग है कि समाजशास्त्री, मनोवैज्ञानिक एवं दिशानायक इस प्रकार की क्रूरतापूर्ण दरिंदगी को समाप्त करने के लिए सामूहिक प्रयास करें तथा त्वरित न्याय करके समाज को दरिंदों से मुक्त करने हेतु व्यापक स्तर पर कार्रवाई करें । भयमुक्त समाज का नारा देने मात्र से इस समस्या का स्थाई निदान सम्भव नहीं है।

नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में टीम इंडिया और खेल भावना की हार

रविवार 19 नवंबर 2023 का दिन भारत के लिए ऐतिहासिक हो सकता था। 1983 और 2011 की तरह टीम इंडिया क्रिकेट विश्वकप तीसरी बार जीत सकती थी। लेकिन खेल है तो हार–जीत लगी रहती है। और इस बार टीम इंडिया सभी मैचों में अपराजेय रहने के बावजूद फाइनल का मुकाबला हार गई। इसका मतलब यही है कि भारतीय टीम मजबूत है, इस बार क्रिकेट विश्वकप की मेजबानी करते हुए भारत में न केवल भारतीय टीम हारी, बल्कि खेल भावना भी नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में बुरी तरह मात खाती नजर आई। दरअसल खेल भावना की हार की पटकथा तो उसी दिन से लिखनी शुरु हो गई थी, जब सरदार पटेल के नाम पर बने स्टेडियम को मौजूदा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम पर किया गया। हुआ था, तो यहां कोई खेल प्रतियोगिता आयोजित न होकर नमस्ते ट्रंप कार्यक्रम किया गया। खेल और राजनीति के घालमेल का यह मोदीयुगीन उदाहरण था। इसके बाद ऐसी कई और मिसालें देखने मिली हैं। महिला पहलवानों ने अपने साथ हुए यौन शोषण की न केवल शिकायत की, बल्कि इसके लिए अदालत तक से गुहार लगा दी, जंतर–मंतर पर खिलाड़ियों के हक में आवाज उठाई थी, तो वे इस बार नरेन्द्र मोदी स्टेडियम नहीं पहुंच पाए। कपिल देव ने मीडिया से बात करते हुए बताया कि वे तो चाहते थे कि उनके साथ पहली बार विश्वकप उठाने वाली पूरी टीम फाइनल मुकाबला देखने पहुंचती, लेकिन बीसीसीआई शायद इतने जरूरी कामों में व्यस्त है कि उन्हें फाइनल मुकाबला देखने के लिए आमंत्रित ही नहीं किया गया। वैसे ये देखना रोचक है कि कपिल देव के किरदार को सिनेमा में उतारने वाले रणवीर सिंह अपनी पत्नी दीपिका पादुकोण के साथ नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में मौजूद थे। फिल्मी, उद्योग और आध्यात्मिक व्यापार से जुड़े कई नामी लोग स्टेडियम में टीम इंडिया का हौसला बढ़ाने के लिए मौजूद थे। भारत रत्न सचिन तेंदुलकर और जग्गी वासुदेव अगल–बगल ही बैठे थे और उन दोनों को आपस में बात करते हुए देखा गया। हालांकि सचिन के आखिर विश्वकप में उन्हें जीत का तोहफा देने वाले कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी भी इस फाइनल मुकाबले में नहीं रहे। शायद बीसीसीआई के लिए क्रिकेट के अहम हस्ताक्षरों से कहीं जरूरी उन लोगों की मौजूदगी थी, जिनके कारण यह खेल सोने का अंडा देने वाली मुर्गी की तरह बना हुआ है। खेल भावना में हार का यह एक और उदाहरण है। विश्वकप मुकाबले में भारत की जीत की उम्मीदें लगाए दर्शकों को काफी मायूसी हुई और यह जायज भी है। लेकिन इसके लिए बहुत से लोगों ने, जिनमें कई राजनेता भी शामिल हैं, नरेन्द्र मोदी को जिम्मेदार ठहराना शुरु कर दिया। अगर इस हार का ठीकरा मोदी सरकार की खेल नीति की वजह से फोड़ा जाता, तब भी बात समझ में आती। मगर कई लोगों ने नरेन्द्र मोदी के लिए पनौती शब्द का इस्तेमाल किया, सोशल मीडिया पर भी यह शब्द ट्रेंड करने लगा। यह सरासर खेल भावना के विरुद्ध बात है। खेल से तो शारीरिक और मानसिक तंदरुस्ती अच्छी होती है, इसमें अंधविश्वास जैसी बीमारी की कोई जगह नहीं होनी चाहिए। नरेन्द्र मोदी की मौजूदगी शिकायत का कारण हो सकती है, क्योंकि जब देश में मणिपुर की गंभीर समस्या है, जब उत्तरकाशी की सुरंग में आठ दिनों से मजदूर फंसे हुए हैं, ऐसे संकटों के बीच प्रधानमंत्री मोदी खेल का आनंद लेने के लिए पहुंचे, यह सही बात नहीं है। श्री मोदी से इस बात की भी शिकायत की जा सकती है कि उनके शासन में देश ये कैसे मुकाम पर आ पहुंचा है, जहां धर्म और राष्ट्रवाद के उन्माद में हम मेहमाननवाजी और सामान्य शिष्टाचार भी भूलते जा रहे हैं। इसी स्टेडियम में पिछले महीने पाकिस्तान के साथ हुए मुकाबले में दर्शकों ने जय श्री राम के नारे लगाकर भारत की अतिथि परंपरा को ठेस पहुंचाई थी। उसके बाद रविवार को आस्ट्रेलियाई टीम के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया गया। उनकी जीत और अच्छे प्रदर्शन पर वाहवाही की जगह सन्नाटा पसरा रहा। लाख की क्षमता वाले स्टेडियम में जब विजेता टीम विश्वकप उठा रही थी तो उसकी हौसलाअफजाई के लिए उंगलियों पर गिने जाने लायक दर्शक मौजूद थे, खुद प्रधानमंत्री आस्ट्रेलियाई कप्तान पैट कमिंस को मंच पर ट्राफी के साथ अकेले छोड़कर चले गए। श्री मोदी के गृहराज्य और उनके नाम पर बने स्टेडियम में विजेता टीम के साथ यह अफसोसनाक व्यवहार हुआ, इसकी शिकायत होनी चाहिए। पनौती जैसे शब्दों के साथ विरोध करने वाले अपने पक्ष को ही कमजोर कर रहे हैं।

आखिरी बात, नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में भारत विश्वकप जीतता तो भाजपा इसे भी चुनावी मुद्दे की तरह इस्तेमाल करती। एक टीवी चौनल ने तो शीर्षक ही लगा दिया था कि मोदी पहुंचे स्टेडियम, अब भारत की जीत पक्की। मोदी राजनीति के धुरंधर खिलाड़ी हो सकते हैं, लेकिन क्या बचपन से उन्होंने क्रिकेट की दीक्षा भी ली है, इस तथ्य का खुलासा होना अभी बाकी है। बहरहाल, आस्ट्रेलिया की लगातार छठवीं जीत और भारतीय टीम की हार के बीच भारत में खेल भावना क्यों हारती जा रही है, इसकी समीक्षा जरूरी है। आस्ट्रेलिया के अखबार तो हमारे इस रवैये की समीक्षा कर ही रहे हैं।

क्यों देश को इंतजार है नोएडा एयरपोर्ट शुरू होने का

अगर सब कुछ योजना के चलता रहा तो उत्तर प्रदेश के जेवर में तेजी से बन रहे नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट से पहली उड़ान अगले साल मार्च के महीने में अपने सफर पर चली जाएगी। यानी अब छह से भी कम महीनों का वक्त बचा है, इसे शुरू होने में। पहले कहा जा रहा था कि यहां से पहली फ्लाइट साल 2024 के अंत में ही उड़ान भरेगी। नोएडा एयरपोर्ट जितना जल्दी शुरू हो जाए उतना ही भारत आने और यहां से जाने वाले करोड़ों मुसाफिरों के लिए एक बड़ी राहत भरी खबर होगी। भारत सरकार का उड्डयन एवं गृह मंत्रालय और उत्तर प्रदेश सरकार मिल कर कोशिश कर रहे हैं ताकि नोएडा एयरपोर्ट वक्त से पहले ही शुरू हो जाए। नोएडा एयरपोर्ट का तुरंत बनना इसलिए भी जरूरी है ताकि इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट (आईजीआई) को यात्रियों की भीड़ से बचाया जा सके। इधर भीड़ के चलते बदइंतजामी और अराजकता के हालात बने रहते हैं। यात्रियों को तीन–तीन घंटे लाइन में लगना पड़ना आज के दिन आम बात हो गई है। आईजीआई एयरपोर्ट पर साल दर साल यात्रियों की भीड़ बढ़ती ही चली जा रही है। आप जानते हैं कि आईजीआई से प्रतिदिन हजारों भारतीय सात समंदर पार यात्रा के लिए जा रहे हैं तो इतने ही दुनिया के अलग–अलग भागों से दिल्ली आ भी रहे होते हैं। पिछले साल 2022 में तो यह दुनिया के सबसे व्यस्त एयरपोर्ट की रैंकिंग में नौवें स्थान पर पहुंच गया। एयरपोर्ट काउंसिल इंटरनेशनल (एसीआई) की रिपोर्ट की मानें तो आईजीआई एयरपोर्ट से साल 2022 में लगभग 5.95 करोड़ लोगों ने यात्रा की। यह भारत का सबसे व्यस्त एयरपोर्ट भी है। शायद यही वजह है कि आईजीआई एयरपोर्ट की वृहद् सुविधाएं भी भीड़ के सामने अब बौनी साबित होने लगी हैं। क्या कुछ साल पहले 31 मार्च, 2006 को जब आईजीआई शुरू हुआ तो किसी ने भी यह सोचा था कि इधर मुसाफिरों की भारी भीड़ से सारी व्यवस्थाएं चरमराने लगेंगी? अगर इतिहास के पन्नों को पलटें तो पता चलेगा कि राजधानी दिल्ली में सबसे पहले 10 मार्च, 1931 को सफदरजंग एयरपोर्ट का विधिवत उद्घाटन हुआ था। हालांकि इससे दो बरस पहले 1929 में ही इसकी सांकेतिक स्थापना भी हो गई थी। तब इसका नाम विलिंग्डन एयर फील्ड था। फिर इसका कुछ समय के बाद नाम कर दिया गया विलिंग्डन एयरपोर्ट। देश के आजाद होते ही विलिंग्डन एयरपोर्ट का नाम हो गया सफदरजंग एयरपोर्ट। बताते हैं, इधर कुछ विमान 1927 से ही उतरने लगे थे। दूसरे विश्व युद्ध में इसका मित्र देशों की सेनाओं ने भरपूर इस्तेमाल भी किया था। दिल्ली का यही 1962 तक मुख्य हवाई अड्डा रहा। उसके बाद पालम एयरपोर्ट बन गया। सफदरजंग एयरपोर्ट को

सुरक्षा कारणों से 2002 में बंद कर दिया गया था। इसे अमेरिका में 26ध्11 की भयंकर घटना को देखते हुए बंद किया गया था। अब भी यहीं से राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और अन्य अति विशिष्ट हस्तियां अपने सफर पर निकलते हैं।

फिर से वर्तमान में लौटेंगे। आईजीआई के शुरू होने के 20 साल के भीतर ही देश को एक नए विश्व स्तरीय एयरपोर्ट की जरूरत महसूस हुई। यह सुबूत है कि देश के एविएशन सेक्टर का तेजी से विकास और विस्तार हो रहा है। इसलिए ही ग्रेटर नोएडा में जेवर एयरपोर्ट को बनाने पर निर्णय लिया गया। जान लें कि तीस हजार करोड़ रुपये की लागत से 1334 हेक्टेयर में बन रहा जेवर एयरपोर्ट भारत का सबसे बड़ा एयरपोर्ट होगा। फिलहाल यात्रियों की आवाजाही के लिहाज से आईजीआई देश का सबसे बड़ा एयरपोर्ट है।

एक बात और। जेवर एयरपोर्ट की टिकटें आईजीआई के मुकाबले सस्ती होंगी। ऐसा दिल्ली और यूपी में एटीएफ (एविएशन टर्बाइन फ्यूल) शुल्क में अंतर के कारण संभव होगा। आईजीआई की तुलना में यात्रियों को प्रति टिकट 1,500 रुपये की बचत होगी। एविएशन मंत्रालय ने अनुमान लगाया है कि जब जेवर एयरपोर्ट से विमानों का परिचालन शुरू हो जाएगा तो यहां से सालाना 1.2 करोड़ यात्रियों की आवाजाही होने लगेगी। यहां से देश के विभिन्न शहरों के लिए विमान सेवा शुरू होंगी। उदाहरण के रूप में दिल्ली–मुंबई के बीच में प्रतिदिन लगभग 100 उड़ानें हैं। उनमें से करीब आधे को जेवर से संचालित किया जा सकता है। इसी तरह से बैंगलुरू, चेन्नई, काशी, पटना, रांची, लेह, गोवा और देश के दूसरे भागों में यहां से विमान उड़ सकते हैं। इसके अलावा लंदन, दुबई, ज्यूरिख या अमेरिका के शहरों को जाने वाली कुछ उड़ानें भी यहां से शुरू की जा सकती हैं। जेवर एयरपोर्ट से नोएडा और ग्रेटर नोएडा में रहने वाले हजारों विदेशी नागरिकों को भी लाभ होगा जो ऑफिस के काम से लगातार हवाई सफर करते रहते हैं। नोएडा और ग्रेटर नोएडा में बड़ी तादाद में दक्षिण कोरिया और जापान के नागरिक रहते हैं। इनमें पेशेवर, इंजीनियर, उद्यमी आदि शामिल हैं। आईजीआई की भीड़ कम करने, यात्रियों की सहूलियत बढ़ाने के लिए इसे जेवर एयरपोर्ट से जोड़ा जाएगा। इसके लिए 74 किलोमीटर लंबा मेट्रो कॉरिडोर बनना भी तय है। जिस पर 120 किमी प्रतिघंटे की रफ्तार से मेट्रो दौड़ेगी। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार जेवर एयरपोर्ट को एयर कार्गो का हब भी बनाना चाहती है। इसके साथ ही एयरपोर्ट पर 40 एकड़ में एमआरओ (मेंटीनेंस रिपेयरिंग एंड ओवर हॉलिंग) की सुविधा दी जाएगी। यानी यहीं देश–विदेश के विमानों की सर्विसिंग भी इसी एयरपोर्ट पर होगी। वर्तमान में भारत के 85 प्रतिशत विमानों को एमआरओ के लिए विदेश भेजना पड़ता है। जिसपर प्रतिवर्ष 15 हजार करोड़ रुपए खर्च होते हैं।

कई बड़ी एयरलाइंस कंपनियों ने जेवर एयरपोर्ट को एशिया पैसिफिक ट्रांजिट हब बनाने में भी दिलचस्पी दिखाई है। इसमें एयर इंडिया, एयर एशिया, विस्तारा, इंडिगो आदि शामिल हैं। इससे एयरपोर्ट में यात्रियों की संख्या में वृद्धि होगी। योगी आदित्यनाथ की अगुवाई वाली राज्य सरकार जेवर एयरपोर्ट को कनेक्टिविटी के मॉडल के रूप में विकसित कर रही है। यहां आने–जाने के लिए टैक्सी, मेट्रो और रेल तक की कनेक्टिविटी सुगम होगी। एयरपोर्ट से निकलते ही यात्री सीधे यमुना एक्सप्रेसवे पर जा सकते हैं, नोएडा–ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे तक जा सकते हैं। यूपी, दिल्ली, हरियाणा कहीं भी जाना है तो थोड़ी सी देर में पेरिफेरल एक्सप्रेसवे पहुंच सकते हैं। इससे यह तो साफ है कि जेवर इंटरनेशनल एयरपोर्ट बनने से आईजीआई की भीड़ काफी हद तक छंट जाएगी।

हाथ मिले लेकिन बनी रही दिलों की दूरियां

बिक्रम उपाध्याय

15 नवंबर को सैन फ्रांसिस्को में चीन–अमेरिका शिखर सम्मेलन से किसको क्या मिला, इससे ज्यादा इस बात की चर्चा रही कि दोनों देशों ने अपने अपने आलोचकों को क्या संदेश दिया। अमेरिका में अगले साल राष्ट्रपति का चुनाव है और बिडेन की लोकप्रियता तेजी से गिर रही है। इसलिए अमेरिकी राष्ट्रपति के लिए इस शिखर सम्मेलन में अमेरिका का वर्चस्व दिखाना अपने विरोधियों को शांत करने के लिए जरुरी था और बिडेन ने ऐसा ही किया। दूसरी तरफ चीन को सिर्फ यह दिखाना था कि विश्व व्यवस्था में उसको नकार कर कोई बड़ी बात नहीं की जा सकती, तो जिनपिंग ने यही संदेश देकर संतुष्टि जताई।

चीनी सरकारी मीडिया ग्लोबल टाइम्स ने अपनी सम्पादकीय टिप्पणी में लिखा है कि उन्होंने (बिडेन और शी जिनपिंग) भविष्य की ओर उन्मुख सैन फ्रांसिस्को विजन की स्थापना की, जो चीन–अमेरिका संबंधों के स्वस्थ, स्थिर और सतत विकास के लिए दिशा प्रदान करेगा। यह शिखर सम्मेलन दोनों राष्ट्राध्यक्षों की रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण और दूरगामी बैठक है, जो चीन–अमेरिका संबंधों के इतिहास में एक अनूठी और गहरी छाप छोड़ती है। स्पष्ट है कि अमेरिका के साथ चीन के ताजा विवादों का कोई हल इस बैठक में नहीं निकला।

इस बैठक के लिए चीन ने आपसी विश्वास कायम करने के प्रयास को ही खुद की उपलब्धि बताई है। यानि संदेह और मतभेदों को खत्म करने का कोई चार्टर नहीं बना। जिन मुद्दों पर सहमति की घोषणा हुई, उनमें मिलिट्री स्तर पर बातचीत पर सहमति, कुछ वर्किंग ग्रुप की स्थापना और आगे बातचीत जारी रखना ही प्रमुख तौर पर सामने आया। बैठक के दौरान, राष्ट्रपति शी ने चीन और अमेरिका के बीच बनी गलत धारणाओं को सही करने पर जोर दिया। असहमतियों पर प्रभावी ढंग से बातचीत करने का सुझाव दिया और दोनों देशों को संयुक्त रूप से जिम्मेदारियां निभानी चाहिए, यह आह्वान किया।

बिडेन और जिनपिंग इसके पहले बाली में मिले थे। तब से अमेरिका की राजनीति में चीन के लिए अविश्वास का माहौल बढ़ा ही है। इसलिए सैन फ्रांसिस्को की बैठक पर दुनिया भर के देशों की नजर थी। इसमें बनी सहमति और उपलब्धियों का भी दुनिया को उत्सुकता से इंतजार था। राष्ट्रपति शी ने 15 नवंबर की शाम को अमेरिका में मैत्रीपूर्ण संगठनों द्वारा आयोजित रात्रिभोज के अपने भाषण में कहा चीन और अमेरिका आपस में प्रतिद्वंद्वी हैं, या भागीदार हैं, यह मौलिक और व्यापक मुद्दा है। चीन अमेरिका का भागीदार और मित्र बनने के लिए तैयार है। लेकिन अमेरिकी जनमत में चीन को बदनाम करने का माहौल बनाया गया है। निस्संदेह आशंका के बादल छटेंगे और विश्वास की रोशनी सामने आएगी।

हालाँकि राष्ट्रपति बिडेन ने बाली बैठक में की गई अपनी पांच प्रतिबद्धताओं को दोहराया,और स्पष्ट किया कि दोनों अर्थव्यवस्थाएं परस्पर निर्भर हैं। चीन की समृद्धि देखकर अमेरिका खुश है और इसका उद्देश्य चीन के विकास को रोकना या दबाना या चीन से संबंध विच्छेद करना नहीं है। लेकिन बिडेन के सामने अमेरिकी अर्थव्यवथा को संभालने की जिम्मेदारी है। अमेरिकी अर्थव्यवस्था लगातार लडखड़ा रही है। अक्टूबर के आंकड़े वॉल स्ट्रीट की उम्मीदों से बेहतर होने के बावजूद, मुद्रास्फीति का खतरा बरकरार है। ब्याज दरें लगभग रिकॉर्ड उच्च स्तर पर हैं। हाउसिंग सेक्टर रेंग रहा है और क्रेडिट कार्ड ऋण अब तक के उच्चतम स्तर पर है। बिडेन खुद अपनी लोकप्रियता खो रहे हैं। हाल ही में किए गए एक सर्वेक्षण में छह राज्यों में केवल दो प्रतिशत मतदाताओं ने कहा कि बिडेन के नेतृत्व में अर्थव्यवस्था ठीक काम रही है। 30 वर्ष से कम आयु के आधे से अधिक मतदाता, हिस्पैनिक, महिलाएं और हर आय वर्ग के लोगों का कहना है कि अर्थव्यवस्था को संभालने के लिए पूर्व राष्ट्रपति ट्रम्प ज्यादा भरोसेमंद हैं। अमेरिका के श्रम सांख्यिकी ब्यूरो के अनुसार भी उपभोक्ता मूल्य सूचकांक अक्टूबर 2023 में सितंबर 2022 की तुलना में 3.2 प्रतिशत बढ़ गया। जबकि कोर सीपीआई, जिसमें ईंधन और भोजन जैसे अधिक अस्थिर अवयव शामिल नहीं हैं, 4 प्रतिशत अधिक था। अमेरिका में आज की कीमतें 2021 की तुलना में लगभग 11 प्रतिशत अधिक हैं। यानि राष्ट्रपति बिडेन बिडेनोमिक्स के बल पर पुनरू चुनाव लडना चाहते हैं, उससे लोगों का वोट शायद उन्हें कम मिल सकता है। इसलिए बिडेन अमेरिका को अपने हितों के प्रति एक आक्रामक देश दिखाना चाहते हैं। यही कारण है कि शी जिनपिंग की इस यात्रा में बिजनेस या इन्वेस्टमेंट पर कोई बात नहीं हुई। दोनों महाशक्तियों ने बातचीत का दरवाजा फिर से बंद नहीं किये जाने से ज्यादा कोई बड़ी बात नहीं की। कई मुददों पर असहमति जताने में संकोच भी नहीं किया। जैसे कार्बन उत्सर्जन को कम करने पर सहमति जताने के बावजूद पेट्रोलियन ईंधन के उपयोग को समाप्त करने के लिए प्रतिबद्ध नहीं हुए।

ताइवान को लेकर भी दोनों देशों के प्रमुखों के बीच तल्खी बनी रही। चीन के विदेश मंत्रालय का दावा है कि राष्ट्रपति शी ने बिडेन के सामने यह मुद्दा रखा कि उन्हें ताइवान को हथियार देना बंद करना चाहिए, क्योंकि द्वीप के साथ चीन का पुनर्मिलन अवश्यम्भावी है। जबकि एक वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारी ने संवाददाताओं से कहा कि ताइवान के मुद्दे पर अमेरिकी दृष्टिकोण नहीं बदलेगा। अमेरिकी राष्ट्रपति ने इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में अपना दखल रखना वाशिंगटन का अधिकार बताया और साफ कहा कि चूँकि हम एक प्रशांत राष्ट्र हैं और हमारी वजह से, क्षेत्र में शांति और सुरक्षा बनी हुई है, इसलिए उनका दावा हमेशा बना रहेगा।

राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार गिरीश चंद्र यादव के प्रयास से स्वीकृति कराई परियोजना

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। विकास की कड़ी मे एक और बड़ी परियोजना खेल एवं युवा कल्याण

राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार गिरीश चंद्र यादव के प्रयास से स्वीकृति कराई। परियोजना के अंतर्गत शीतला धाम चौकिया चौराहा से आरा गांव तक लगभग 12.00 किलोमीटर लम्बाई की सड़क का चौडीकरण व सुदृकरण होगा जो जौनपुर व आजमगण की सीमा को जोड़ती है।

इस सड़क को चौडीकरण व सुध दरिकरण करने के उत्तर प्रदेश शासन से प्रशासकीय एवं वित्तीय स्वीकृत लगभग 197489000–00 (उन्नीस करोड़ चौहात्तर लाख नवासी हजार रुपया) मिल गयी है।

इस संबंध मे शासन ने एक पत्र प्रमुख अभियंता, लोक निर्माण विभाग को भेजा है जिसमे उन्होंने चालू वित्तीय वर्ष 2023–24 स्वीकृति बजट के सापेक्ष मे प्रथम किस्त 49372000/– (चार करोड़ तिरानवे लाख बहत्तर हजार रूपये) जारी कर दी गयी है। अब जल्द से जल्द निर्माण कार्य की प्रकिया शुभारम्भ होगा.

इस सड़क परियोजना से माता शीतला धाम चौकिया आने वाले माता रानी के भक्तो को लाभ मिलेगा।

इस परियोजना के बन जाने से जनपद वासियों को बहुत लाभ मिलेगा. इस परियोजना को स्वीकृत करने के लिए यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महाराज के साथ कैबिनेट मंत्री सुरेश खन्ना व लोक निर्माण मन्त्री जितीन प्रसाद को बहुत–बहुत आभार। उक्त जानकारी मीडिया प्रभारी मनीष श्रीवास्तव ने दिया।

नफर वारंटी अभियुक्त को पचदेवरा पुलिस ने किया गिरफ्तार

'रिपोर्ट–जनार्दन श्रीवास्तव'

'पाली –(हरदोई)' पचदेवरा में अपराध व अपराधियों पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस अधीक्षक केशव चंद गोस्वामी द्वारा विशेष अभियान चलाया जा रहा है। जिससे अपराध और अपराधियों पर लगाम लग सके। जिसके क्रम में सभी थाना प्रभारियों को निर्देश दिए गए उसी निर्देश का पालन करते हुए पुलिस अपराधियों पर कार्यवाही करते हुए नजर आ रही हैं। मंगलवार को थाना पचदेवरा थाना प्रभारी व पुलिस टीम द्वारा एक

नफर वारंटी अभियुक्त को गिरफ्तार करने में सफलता पाई गयी। काफी दिनों से यह अभियुक्त पुलिस से आंख मिचौली खेल फरार चल रहा था। मंगलवार को पचदेवरा पुलिस ने थाना क्षेत्र के लखनौर गांव निवासी नफर वारंटी अभियुक्त सागर उर्फ प्रेमसागर पुत्र बालकराम को लखनौर गांव से गिरफ्तार कर लिया। पचदेवरा इंस्पेक्टर विद्या सागर पाल ने बताया कि गिरफ्तार अभियुक्त को न्यायालय के सुपुर्द करके विधिक कार्यवाही की जायेगी।

वोटर चेतना महाअभियान के अंर्तगत कार्यकर्ता घर–घर जाकर 18 साल पूरे करने वाले मतदाताओं का नाम वोटर लिस्ट में शामिल करायें: अशोक चौरसिया

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर । भारतीय जनता पार्टी जौनपुर ने जिला में वोटर चेतना महाभियान के अंर्तगत पार्टी के सीहीपुर स्थित कार्यालय पर जिलाध्यक्ष पुष्पराज सिंह के अध्यक्षता में बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में जिला प्रभारी एवं क्षेत्रीय महामंत्री अशोक चौरसिया एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में राज्य सभा सांसद सीमा द्विवेदी एवं एमएलसी बृजेश सिंह प्रिन्सु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर माल्यार्पण कर की गई। तत्पश्चात सभी कार्यकर्ताओं के द्वारा बंदे मातरम का गीत गाया गया। उसके पश्चात मुख्य अतिथि का जिलाध्यक्ष पुष्पराज सिंह ने स्मृति चिन्ह एवं पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया।

मुख्य अतिथि क्षेत्रीय महामंत्री एवं जिला प्रभारी अशोक चौरसिया ने कहा कि वोटर बनाना और मतदाताओं को अपने पक्ष में जोड़ना भाजपा कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी है। वोटर चेतना महाअभियान के अंर्तगत कार्यकर्ता घर–घर जाकर 18 साल पूरे करने वाले मतदाताओं का पहचान पत्र बनाकर वोटर लिस्ट में शामिल करायें। लोकसभा में जीत दर्ज करने के लिए भाजपा ने यूथ के साथ ही नये वोटरों पर भरोसा जताया है। बीते चुनाव में यूथ का अधिकतर वोट भाजपा को ही मिला था। पार्टी की जीत सरकार गठन में इस मतदाता वर्ग का खासा योगदान रहेगा इसलिये नये वोटर और छूटे वोटरों को मतदाता सूची में शामिल कराने पर जोर दिया जाय युवा वोटरों का एक बहुत बड़ा वर्ग भाजपा के लिए वोट करता रहा नेतृत्व यह

भली प्रकार से जानता है बीते दो लोकसभा चुनाव इसका प्रमाण हैं। इस खास अभियान की मुख्य वजह ही युवाओं को ज्यादा से ज्यादा जोड़ना है। 2024 में मताधिकार पाने वाले युवा वोटरों का नाम मतदाता सूची में शामिल करने का अभियान इसीलिए चलाया जाएगा। छूटे वोटरों को जोड़ने का काम भी अभियान का हिस्सा है। कार्यकर्ता घर–घर जाकर यह कार्य करेंगे।

उन्होंने आगे कहा कि वोटर चेतना महाभियान प्रत्येक दहलीज पर पहुंचने का अभियान है विवाह होने के बाद परिवर्तित निवास स्थान, बूथ से अन्यत्र निवास करने वाले तथा बूथ पर नए आये मतदाताओं के नाम मतदाता सूची में जोड़ने या नाम कटने का कार्य तथा दिवंगत मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से कटवाने का कार्य वोटर चेतना महाभियान के माध्यम से करना है।

राज्यसभा सांसद सीमा द्विवेदी ने कहा कि बैठक का उद्देश्य नए वोटर को जोड़कर पार्टी को सशक्त बनाना है। इससे पार्टी की विस्तार होगी भाजपा इसके लिए जमीन से जुड़े कार्यकर्ताओं को तरजीह देती है। इससे पार्टी का जनाधार बढ़ने के साथ विस्तार भी होता है। 2024 में संसद का चुनाव होना है नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में फिर एक बार सरकार बनाना है भारत को विश्वगुरु बनाना है।

एमएलसी बृजेश सिंह प्रिन्सु ने कहा कि हमारी सरकार हमारे राष्ट्र को सशक्त बना रही है और समृद्धि की नई ऊंचाइयों की ओर ले जा रही है। आज मोदी के नेतृत्व में देश में एक नई राजनीति की शुरुआत हुई है जिसने आम नागरिकों की भावना को समेट लिया।

पूर्व विधायक सुषमा पटेल ने कहा कि नव मतदाताओं से सम्पर्क करके उन्हें पार्टी से जोड़कर 2024 लोकसभा चुनाव की विजय आसान होगी और भाजपा प्रदेश में 80 सीटों पर विजय के लक्ष्य को प्राप्त करेगी।

जिलाध्यक्ष पुष्पराज सिंह ने अध्यक्षीय संबोधन देते हुये कहा कि पार्टी के अनुशासित व समर्पित कार्यकर्ताओं को सतत सम्पर्क व सतत संवाद की भाजपा परम्परा के साथ फिर एक बार घर–घर दस्तक देना है। 2024 का चुनाव हमारे लिए बड़ा चुनाव होने वाला है आज सारे विपक्षी दल भाजपा सरकार को हार का मुंह दिखाना चाहते हैं सारे राजनीतिक दल भले हमारे खिलाफ हों लेकिन आम जनता हमारे साथ है। भाजपा पिछले लोकसभा चुनाव में तमाम दलों के गठबंधन के बावजूद भाजपा को 50 फीसदी से ज्यादा वोट मिला था। इस बार भी तमाम दलों के गठबंधन के बावजूद भाजपा को अधिक से अधिक वोट मिलेगा जैसे नगरीय निकाय, पंचायत तथा सहकारिता के चुनावों में भाजपा ने ऐतिहासिक विजय प्राप्त की है। ऐसे में भाजपा का मजबूत संगठनात्मक ढांचा किसी भी चुनौती को स्वीकार करके परिणाम देने में सक्षम है।

बैठक का संचालन जिला महामंत्री सुनील तिवारी ने की। उक्त अवसर पर पूर्व जिलाध्यक्ष एवं लोकसभा संयोजक अशोक श्रीवास्तव जिला महामंत्री सुशील मिश्रा पीयूष गुप्ता ई अमित श्रीवास्तव जिला उपाध्यक्ष एवं वोटर चेतना महाअभियान के संयोजक संतोष सिंह सुधाकर उपाध्याय सुरेन्द्र सिंघानिया संदीप सरोज जिला मंत्री उमाशंकर सिंह अवधेश यादव राज पटेल प्रमोद यादव संतोष मिश्रा पूर्व जिला महामंत्री संदीप तिवारी शशि मौर्य अंजना श्रीवास्तव ब्लाक प्रमुख गण धीरू सिंह बृजेश यादव सत्येन्द्र सिंह फंटू उमेश तिवारी मम्मन यादव धनन्जय सिंह सुभाष शुक्ला भूपेन्द्र सिंह विपिन द्विवेदी ओमप्रकाश सिंह आमोद सिंह रोहन सिंह सिद्धार्थ राय पवन पाल अम्बरीशधर द्विवेदी नरेन्द्र उपाध्याय रागिनी सिंह अनिल गुप्ता दिव्यांशु सिंह अजय सरोज अजय सिंह जितेंद्र सिंह राजकुमार जायसवाल आशीष गुप्ता प्रबुद्ध दुबे इन्द्र्सेन सिंह घनश्याम यादव मण्डल अध्यक्ष गण बलबीर गौड़ विनोद मौर्य लवकुश सिंह अजय मिश्रा शैलेस सिंह जितेंद्र मिश्रा नरेन्द्र विश्वकर्मा अमित श्रीवास्तव विकास शर्मा राजकेशर पाल धर्मेंद्र मिश्रा संतोष गुप्ता उमेश सिंह चिंताहरण शर्मा देवी प्रसाद सिंह जितेंद्र सिंह विनोद सिंह सहित तमाम कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाना है : आरिफ मोहम्मद खान राज्यपाल

भारत को सच्ची स्वतंत्रता तभी प्राप्त होगी, जब भारत की बुनियाद पूर्ण रूप से शिक्षा पर आधारित हो जाए : राज्यपाल

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य ही शिक्षा और सीखने पर ध्यान केंद्रित करना और "भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति" बनाना है। उक्त बाते केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने बुधवार को जौनपुर डाक बंगले में पत्रकारों से बात करते हुए कही। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य 2040 तक एक कुशल शिक्षा प्रणाली बनाना है, जिसमें सभी शिक्षार्थियों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक समान पहुंच हो। उन्होंने कहा कि इसका उद्देश्य एक नई प्रणाली का निर्माण करना है जो भारत की परंपराओं और मूल्य को अपने अंदर समाहित करते हुए विश्वगुरु बनने का मार्ग प्रशस्त करे।

उन्होंने कहा कि भारत का पुनः गौरव स्थापित करने के लिए नई शिक्षा नीति में भारत के सांस्कृतिक इतिहास, वैज्ञानिक उनवेष (नवाचार) इत्यादि आयामों पर विशेष बल दिया गया है। उन्होंने कहा कि बिना शिक्षा के मनुष्य का जीवन ही अधूरा रहता है। उन्होंने कहा कि आज के तकनीक के युग में तकनीक आधारित पूंजी का निर्माण होता है, आज जिसके पास तकनीक है वही पूंजीपति है। नई शिक्षा नीति जन–जन को तकनीकी ज्ञान एवं अपने संस्कृति का ज्ञान देने के लिए लाई गई है।

उन्होंने गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर के द्वारा कही गई बातों का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत को सच्ची स्वतंत्रता तभी प्राप्त होगी, जब भारत की बुनियाद पूर्ण रूप से शिक्षा पर आधारित हो जाए। उन्होंने कहा कि भारत ज्ञान, शिक्षा और प्रज्ञा का केंद्र है। उन्होंने कहा कि हमें सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने के लिए शिक्षित होना बहुत जरूरी है। स्वामी रंगनाथन के द्वारा कही गई बातों का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि उन्होंने कहा था कि लोग कहते हैं कि जिसके पास सरस्वती रहती हैं वहां लक्ष्मी नहीं जाती मगर रंगनाथन ने कहा कि यह बात बिल्कुल गलत है जहां सरस्वती रहेगी वहां लक्ष्मी जी अपने आप आ जाएंगी। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि अगर शिक्षित व्यक्ति अपनी शिक्षा का उपयोग किसी को शिक्षित करने में नहीं करता है तो उसे अगर गद्दार की संज्ञा दी जाए तो गलत नहीं होगा।इस दौरान भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष पुष्पराज सिंह मौजूद रहे।

मिशन शक्तिएवं यातायात माह के तहत छात्र/छात्राओं को किया जागरूक

'रिपोर्ट–जनार्दन श्रीवास्तव'

'पाली–हरदोई' थाना पाली पुलिस ने मिशन शक्ति दीदी के तहत कस्बे के सेठ बाबूराम भारतीय इण्टर कालेज में जन कल्याणकारी योजनाओं सहित साइबर क्राइम आदि की जानकारी देकर छात्राओं को जागरूक किया। आपको बता दें कि बुधवार को पाली पुलिस टीम ने कालेज में जाकर मिशन शक्ति जागरूकता अभियान के अंतर्गत छात्राओं की सुरक्षा सम्मान व स्वावलंबन के विषय पर चर्चा कर उन्हें जागरूक किया। महिला आरक्षी आरजू ने छात्राओं को वीमेन पावर लाइन –1090,पुलिस आपातकालीन सेवा– 112,एम्बुलेंस सेवा– 108,महिला हेल्पलाइन –181आदि के बारे में बताया। इसके साथ ही घरेलू हिंसा और साइबर अपराधों के बारे में साइबर हेल्पलाइन नंबर–1930 की जानकारी दी। महिला कांस्टेबल कविता ने कहा कि विद्यालय परिवेश ,घर के आसपास कहीं भी महिलाएं और छात्रायें छेड़छाड़ या भद्दे कमेंट का अक्सर शिकार होती हैं।इस स्थिति में उन्हें तुरंत अपने परिजनों एवं अपने शिक्षकों को इसकी जानकारी देनी चाहिए।तथा महिला हेल्पलाइन नंबर 1090 पर सम्पर्क कर भी सुरक्षा सहायता ले सकती हैं। इसी के साथ ही पुलिस की ओर से चलाये जा रहे यातायात माह के तहत उपनिरीक्षक श्रीपति मौर्य ने मौजूद छात्रछात्राओं को यातायात नियमों के प्रति जागरूक किया। साथ ही उन्होंने बताया कि घर से बाहर जब भी गाड़ी लेकर जाएं हेलमेट अवश्य पहनें क्योंकि जीवन बहुत अनमोल है।जीवन सुरक्षा की जिम्मेदारी आपके हाँथ में है।जहां सावधानी हटी वहाँ दुघर्टना घटी। उन्होंने हेलमेट पहनने एवं यातायात नियमों का पालन करने पर विशेष जोर दिया। इस अवसर पर अतिरिक्त निरीक्षक वहीद अहमद ने कहा कि सड़क दुघर्टना रोकने में कालेज के छात्रों की भूमिका अहम है। उन्होंने छात्रछात्राओं से जिम्मेदार बनने और समाज में सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता लाने की भी अपील की। इस अवसर पर पुलिस टीम में अतिरिक्त निरीक्षक वहीद अहमद, उपनिरीक्षक श्रीपति मौर्य,महिला कांस्टेबल आरजू,कविता,कांस्टेबल बिजेंद्र सिंह,कांस्टेबल अमित कुमार सहित विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ वीपी द्विवेदी,शिक्षक विनोद प्रताप वर्मा,सोनू कुमार, अनिल कुमार यादव,संजय कुमार रस्तोगी, जनार्दन श्रीवास्तव,संतोष कुमार पाण्डेय आदि मौजूद रहे।

पूर्वांचल विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

1–छात्र छात्राओं ने लोगों को वोटर बनाने हेतु प्रेरित करने व मतदाताओं को साक्षर करने का लिया संकल्प

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर । जिलाधिकारीध जिला निर्वाचन अधिकारी अनुज कुमार झा के निर्देशन में चल रहे मतदाता जागरूकता अभियान के अन्तर्गत, निर्वाचन साक्षरता क्लब वीबीएस पूर्वांचल विश्व विधालय द्वारा बुधवार को इंजीनियरिंग संकाय में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें छात्र छात्राओं ने लोगों को वोटर बनाने हेतु प्रेरित करने व मतदाताओं को साक्षर करने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर पोस्टर व स्लोगन प्रतियोगिता आयोजित हुई। जिसमें छात्रों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए लोगों को वोटर बनने के लिए प्रेरित किया। तथा लोगों को आनलाइन आवेदन करने हेतु जागरुक करने के लिए वोटर हेल्पलाइन ऐप डाउनलोड किया।

इस अवसर पर छात्र छात्राओं को मतदाता बनाने के लिए इंजीनियरिंग संकाय में मतदाता पंजीकरण कक्ष (मतदाता हेल्प डेस्क) का शुभारंभ डीन इंजीनियरिंग संकाय प्रो बी बी तिवारी ने किया।

इस अवसर पर प्रो बी बी तिवारी ने कहा कि लोकतंत्र की मजबूती के लिए हर नागरिक का मतदान करना जरुरी है। और आप मतदान तभी कर सकते हैं जबकि आप वोटर होगें। इसलिए सबसे पहले वोटर बने। उन्होंने सभी छात्र छात्राओं से अपील किया कि जो 18 वर्ष के हो चुके हैं या जिनकी आयु 01 जनवरी 2024 को 18 वर्ष पूरी हो रही है वे वोटर लिस्ट में अपना नाम जुड़वाये।

जिला स्वीप कोआर्डिनेटर सैय्यद मोहम्मद मुस्तफा ने कालेज में बने कैम्पस अम्बेस्डरो को जिम्मेदारी देते हुए कहा कि अपने परिसर में स्थित विभिन्न संकायों में अध्ययनरत छात्र छात्राओं को वोटर बनाने के लिए वोटर हेल्पलाइन ऐप के माध्यम से आनलाइन आवेदन कराये। तथा छात्र छात्राओं से कहा कि अपने परिवार व समाज व आस पास के सभी लोगों को मतदाता बनने के लिए व उनमें निर्वाचन साक्षरता बढ़ाने के लिए जागरुक करें। उन्होंने युवाओं व महिलाओं को विशेषकर मतदाता बनाने पर बल दिया।

पीयू स्वीप नोडल ज्ञानेंद्र पाल ने कहा कि मतदाता बनने के लिए 9 दिसम्बर 2023 तक आनलाइन या आफलाइन आवेदन कर सकते हैं। 25, 26 नवम्बर व 02, 03 दिसम्बर को बीएलओ सभी मतदान केंद्रों पर बैठेगे, इसलिए मतदाता पंजीकरण हेतु उनसे सम्पर्क करे।

इस अवसर पर प्रो रजनीश भास्कर, दिलीप यादव, अशोक यादव, रितेश श्रीवास्तव, प्रवीण पाण्डेय, कैम्पस अम्बेसडर भास्कर उपाध्याय, अनिकेश यादव, यतनदीप दुबे, अलिन्द्र श्रीवास्तव, प्रज्ञा गुप्ता, खुशी सिंह, शशांक भारती सहित, एम बी ए संकाय, इंजीनियरिंग संकाय, विज्ञान संकाय आदि के छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

पुलिस मुठभेड़ में अंतर्जनपदीय दो बदमाश गिरफ्तार एक के पैर में लगी गोली

1–घायल बदमाश इलाज हेतु वाराणसी ट्रामा सेंटर में भर्ती

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। पुलिस अधीक्षक डॉक्टर अजय पाल शर्मा द्वारा अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए लगातार चलाए जा रहे अभियान के क्रम में बीती रात मंगलवार को गौराबादशाहपुर व केराकत की संयुक्त पुलिस टीम के साथ हुई मुठभेड़ में शातिर अन्तर्जनपदीय अपराधी गैंगेस्टर में वांछित शैलेश यादव घायल हुआ जबकि एक अन्य साथी मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार किया गया है। मुठभेड़ के दौरान एक अपराधी के पैर में गोली लगी जिसे गंभीर अवस्था में वाराणसी ट्रामा सेंटर रेफर किया गया है इनके, कब्जे से एक चोरी की बाइक , एक देशी तमंचा कारतूस 315 बोर, तीन मोबाइल बरामद किया गया है। घटना की जानकारी देते हुए बुधवार को क्षेत्राधिकारी शुभम तोदी ने बताया कि पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर बीती रात दोनों थाना क्षेत्र में संदिग्ध अपराधियों और वाहन चेकिंग अभियान चलाया जा रहा था कि अचानक बाइक पर सवार दो संदिग्ध दिखाई पड़े जिसे रोकने की प्रयास किया गया बदमाश पुलिस देख भागने लगे और पुलिस के ऊपर फायरिंग भी करने लगे पुलिस ने आत्मरक्षा में गोली चलाई एक बदमाश के पैर में गोली लगी और दूसरे को गिरफ्तार कर लिया गया पकड़े गए बदमाश काफी शातिर किस्म के हैं इनके खिलाफ जनपद के विभिन्न थाना क्षेत्र में आधा दर्जन से अधिक मुकदमे भी दर्ज है पकड़े गए बदमाश के पास से एक बाइक व कुछ पैसे तमंचा बरामद किया गया है इनके खिलाफ विधिक कार्रवाई की जा रही है।गिरफ्तार अभियुक्त का नाम व पता शैलेश यादव पुत्र हीरालाल यादव निवासी पतौरा थाना केराकत जौनपुर।(घायल)व दिनेश कुमार पुत्र सुबाष निवासी खटहरा थाना केराकत जौनपुर शामिल है। इनके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर इन्हे जेल भेजा जा रहा है वह अन्य विधि कार्रवाई की जा रही है।

क्षय रोगियों को पौष्टिक आहार किट वितरण

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर सरजू प्रसाद शैक्षिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था जज कॉलोनी द्वारा प्रधानमंत्री टी. बी. मुक्त भारत अभियान के तहत गोद लिए क्षय रोगियों को पौष्टिक आहार किट का वितरण किया गया। सर्वप्रथम मां सरस्वती की प्रतिमा पर ठाकुर प्रसाद राय प्रधानाचार्य डॉक्टर सुबाष सिंह सलिल कुमार यादव शैलेंद्र निषाद ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने कहा कि प्रधानमंत्री टीवी मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत गोद लिए मरीजों को पौष्टिक आहार किट वितरण कर एवं उनके देखभाल कर राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम की सेवाओं को सुदृढ़ किया गया है इसमें संस्था के द्वारा अत्यंत सराहनीय कार्य किया गया है।

विशिष्ट अतिथि मुख्य वक्ता टी. बी. जिला समन्वयक सलिल कुमार यादव ने कहा कि 23 नवंबर से

एक्टिव कैसे फाइंडिंग के तहत घर–घर स्क्रीनिंग की जाएगी टीवी मुक्त वार्ड नगर व पंचायत बनाया जाएगा।

टी.बी. किसी को भी हो सकती है टी.बी. पीढ़ी दर पीढ़ी फैलने वाला रोग नहीं है बल्कि यह हवा के जरिए फैलने वाला एक संक्रामक रोग है। किसी भी व्यक्ति को दो सप्ताह या उससे अधिक समय से खांसी हो तो उसे टी.बी.हो सकती है टी.बी. के लिए अपने बलगम की जांच नजदीकी सरकारी स्वास्थ्य केंद्र (डीएमसी)में करवाये, यह जांच पूरी तरह निरूशुल्क की जाती है।

अध्यक्षता बीआरपी कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉक्टर सुबाष सिंह ने कहा कि टी.बी. का इलाज पूरी तरह संभव है ।डॉट के अंतर्गत उच्च गुणवत्ता वाली दवाइयां सरकारी स्वास्थ्य केदो में निशुल्क दी जाती है । विशिष्ट अतिथि फूलचंद भारती ने कहा कि याद रखें टी.बी. जड़ से खत्म करने के लिए उसका उपचार पूरा करें ।

विशिष्ट अतिथि मां मूर्ति ग्रुप प्लांटेशन एवं एनवायरनमेंट के शैलेंद्र कुमार निषाद ने कहा कि टीवी से संबंधित जागरूकता फैलाने में आप सब का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है।

उक्त अवसर पर अनिल गुप्ता सागर श्रीवास्तव अतुल प्रधान अध्यापक दय प्रमोद कुमार प्रजापति सुबाष सरोज राजकीय कॉलेज प्रधानाचार्य प्रभाकर सिंह वीरेंद्र गुप्ता राजीव कुमार राजू देवांश कुमार मोहम्मद शमीम मोहम्मद अजहर मोहम्मद आसिफा खान मोहम्मद रमेश कुमार कैलाश प्रजापति मनोज कुमार प्रजापति मुन्ना मौर्य शुभम यादव इन सब ने सहयोग किया। साहित्यकार गिरीश श्रीवास्तव गिरीश ने कार्यक्रम का संचालन किया।

कार्यक्रम संयोजक संजय उपाध्याय पूर्व अध्यक्ष बाल न्यायालय ने आए हुए सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

महिला थाना मे थानाध्यक्ष की कुर्सी आबाद न होने के चलते फरियादी हो रहे मायूस

शीघ्र ही महिला थानाध्यक्ष की होगी तैनाती - सीओ सिटी

अयोध्या।(डाक्टर अजय तिवारी जिला संवाददाता)जिले में इस महिला थाना महिला थानाध्यक्ष की कुर्सी खाली चल रही है।मजे की बात तो यह है कि इस थाना पर इस समय सिर्फ एक उप निरीक्षक की तैनाती है वह भी अवकाश पर चल रही है।जिसके चलते इस थाना परिसर में अपनी विभिन्न समस्याओं की समाधान के लिए दूर दराज से आने वाली महिला बिना समस्या के निराकरण के मायूस होकर अपने अपने घरों को जाने पर मजबूर हो रही है।बताते चलें इधर इस थाने में महिला थाना प्रभारी निरीक्षक पद पर तैनात निशा शुक्ला की सुल्तानपुर स्थानान्तरण होने के चलते दो दिन पहले एसएसपी राज करण नैय्यर ने उन्हें कार्यमुक्त कर दिया।वही इस थाने मे एक मात्र उप निरीक्षक वंदना ही है जो इस समय अवकाश पर चल रही है। इधर दो दिनों से दूर दराज से अपनी विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए महिला व अन्य फरियादी दूर दराज से आ रहे हैं। परंतु इस थाने पर किसी थानाध्यक्ष व उप निरीक्षक के न होने के चलते उन सभी फरियादियों को मायूस होकर वापस लौटना पड़ रहा है।इस संबंध में सीओ सिटी शैलेंद्र सिंह ने बताया कि एक दो दिन में शीघ्र ही महिला थाना मे महिला थानाध्यक्ष की तैनाती हो जाएगी।जिसके चलते यहां पर आने वाले फरियादियों की समस्या का तुरंत समाधान किया जा सके।

पुरानी पेंशन बहाली को लेकर मतदान हड़ताल

मृत्युंजय प्रताप सिंह की रिपोर्ट

लखनऊ सऑल इण्डिया रेलवे मेन्स फेडरेशन नई दिल्ली एवं एन ई रेलवे मजदूर यूनियन के आहवान पर नरमू के मण्डल मंत्री कामरेड आर एस गर्ग के नेतृत्व में लखनऊ जंक्शन स्टेशन , बी जी कॉम्प्लेक्स, ट्रैक मेंटेनर ट्रेनिंग स्कूल रेलपथ डीपो गार्डध लोको पायलेट क्रू लाबी, ऐशबाग लखनऊ सिटी , बख्शी का तालाब आदि समस्त लखनऊ मण्डल के स्टेशनों पर हड़ताल मतदान का कार्यक्रम संपन्न किया गया स ए आई आर एफ के

महामंत्री कामरेड शिवगोपाल मिश्रा के निर्देशानुसार 21 व 22 नवम्बर को संपूर्ण भारतीय रेल में पुरानी बहाली के पक्ष एन पी एस को रद्द करके ओ पी एस को पुनः बहाल करने हेतु हड़ताल किया जाना है स हड़ताल मतदान का कार्यक्रम लखनऊ मण्डल के सभी स्टेशनों पर नरमू के द्वारा 21नवम्बर व 22 नवम्बर को चलाया जायेगा स लखनऊ।

परिसर में उबैद अहमद , सूरज पाण्डेय ,ज्ञानेंद्र सिंह , नैयर अहमद , ए के रावत , शशि भूषण , मोहम्मद नसीम , अजय सिंह , महेश सिंह परवीन कुमार सुनील यादव , अमित पाल आदि लोग रहे।

युवाओं और महिलाओं को मतदाता बनाने पर जोर

विद्यार्थियों ने वोटर और मतदाताओं को साक्षर करने का लिया संकल्प

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। जिलाधिकारीधजिला निर्वाचन अधिकारी अनुज कुमार झा के निर्देशन में चल रहे मतदाता जागरूकता अभियान के अन्तर्गत, निर्वाचन साक्षरता क्लब वीबीएस पूर्वांचल विश्वविद्यालय द्वारा इंजीनियरिंग संकाय में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें छात्र– छात्राओं ने लोगों को वोटर बनाने हेतु प्रेरित करने व मतदाताओं को साक्षर करने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर पोस्टर और स्लोगन प्रतियोगिता आयोजित हुई। इसमें छात्रों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए लोगों को वोटर बनने के लिए प्रेरित किया। साथ ही लोगों को आनलाइन आवेदन करने हेतु जागरूक करने के लिए वोटर हेल्पलाइन ऐप डाउनलोड किया। इस अवसर पर छात्र छात्राओं को मतदाता बनाने के लिए इंजीनियरिंग संकाय में मतदाता पंजीकरण कक्ष (मतदाता हेल्प डेस्क) का शुभारंभ डीन इंजीनियरिंग संकाय प्रो. बीबी तिवारी ने किया। इस अवसर पर प्रो बी बी तिवारी ने कहा कि लोकतंत्र की मजबूती के लिए हर नागरिक का मतदान करना जरूरी है। आप मतदान तभी कर सकते हैं जबकि आप वोटर होंगे। इसलिए सबसे पहले वोटर बने। उन्होंने सभी छात्र–छात्राओं से अपील किया कि जो 18 वर्ष के हो चुके हैं या जिनकी आयु 01 जनवरी 2024 को 18 वर्ष पूरी हो रही है वे वोटरलिस्ट में अपना नाम जोड़वा लें।

जिला स्वीप कोआर्डिनेटर सैय्यद मोहम्मद मुस्तफा ने कालेज में बने कैम्पस अम्बेस्डर को जिम्मेदारी देते हुए कहा कि अपने परिसर में स्थित विभिन्न संकायों में अध्ययनरत छात्र छात्राओं को वोटर बनाने के लिए वोटर हेल्पलाइन ऐप के माध्यम से आनलाइन आवेदन कराये, तथा छात्र छात्राओं से कहा कि अपने परिवार व समाज व आस पास के सभी लोगों को मतदाता बनने के लिए व उनमें निर्वाचन साक्षरता बढ़ाने के लिए जागरुक करें। पीयू स्वीप नोडल ज्ञानेंद्र पाल ने कहा कि मतदाता बनने के लिए 9 दिसम्बर 2023 तक आनलाइन या आफलाइन आवेदन कर सकते हैं। 25, 26 नवम्बर व 02, 03 दिसम्बर को बीएलओ सभी मतदान केंद्रों पर बैठेगे, इसलिए मतदाता पंजीकरण हेतु उनसे सम्पर्क करें। इस अवसर पर प्रो रजनीश भास्कर, दिलीप यादव, अशोक यादव, रितेश श्रीवास्तव, प्रवीण पाण्डेय, कैम्पस अम्बेसडर भास्कर उपाध्याय, अनिकेश यादव, यतनदीप दुबे, अलिन्द्र श्रीवास्तव, प्रज्ञा गुप्ता, खुशी सिंह, शशांक भारती सहित, एम बीए संकाय, इंजीनियरिंग संकाय, विज्ञान संकाय आदि के छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

केनरा बैंक के स्थापना दिवस पर प्राथमिक विद्यालय गोइला में सीएसआर गतिविधि आयोजित की गई

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। परिवर्तन लानेध कठिनाइयों और कष्टों को दूर करने की दृष्टि से साथी मनुष्यों के प्रति चिंता और परिवेश के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना हमारे प्रिय संस्थापक श्री अम्मेबल सुब्बाराव पई द्वारा परिकल्पित बैंक के संस्थापक सिद्धांतों में से एक रहा है। हमारे संस्थापक दिवस के अवसर पर इस सिद्धांत को याद करने और हमारे जीवन में फिर से स्थापित करने के लिए, केनरा बैंक गोइला शाखा अपने सक्षम लीडर लखनऊ अंचल प्रमुख आलोक कुमार अग्रवाल और अंचल प्रमुख और क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ प्रथम के सहायक महाप्रबंधक अमित कुमार अस्थाना के मार्गदर्शन में शाखा प्रमुख सुम्बुल जलाली और शाखा कर्मचारियों के साथ बैंक के स्थापना दिवस के अवसर पर गोइला गॉव में गोइला प्राइमरी स्कूल के छात्रों को स्वेटर और स्कूल बैग वितरित किए गए, जिसका उद्देश्य गरीब आर्थिक परिवारों से आने वाले बच्चों के लिए स्कूल जाना सुखद अनुभव बनाना था। छात्रों और शिक्षण स्टाफ और स्कूल के निवासियों ने भी उनकी चिंता और पहल के लिए बैंक की बहुत सराहना की है। उत्तर प्रदेश मे केनरा बैंक का अंचल कार्यालय जुलाई1989 मे 259 शाखाओं और मंडल कार्यालयों के साथ शुरू हुआ था। समय के साथ साथ बैंकिंग व्यवसाय और ग्राहकों की संख्या में। तेजी से बढ़ोत्तरी होने पर प्रत्येक जिले मे बैंक की शाखाओं ने अपनी उपस्थित दर्ज कराई और आज के समय उत्तर प्रदेश मे कुल शाखाएँ और कार्यालयों की संख्या 969 हो गयी, जिसमे लखनऊ अंचल मे 474 और आगरा अंचल मे 495 शाखाएँ अपनी जमा तथा ऋण योजनाओं मे 325 उत्पादों के साथ ग्राहकों की हर क्षेत्र मे सेवा कर आज सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों मे अग्रणी बैंक बन कर उभरा है।

ना नफरतों मे ठेलों और ना फसादी बनों, अगर समाज है प्यारा समाजवादी बनों

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। समाजवादी पार्टी के कार्यालय पर निवर्तमान जिलाध्यक्ष डां अवधनाथ पाल के अध्ययता में पूर्व मुख्यमंत्री स्वं मुलायम सिंह यादव(नेताजी)के 85 वीं जंयती के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन किया गया सर्व प्रथम नेताजी के चित्र पर उपस्थित लोगों पुष्पांजलि अर्पित किया उसके बाद दिव्यांग एवं विकलांग बच्चों को स्वेटर,स्कूल बैग,पेंसिल बॉक्स वितरण किया गया।तदुपरांत मुशायरे का आयोजन किया गया। जिसमें प्रमुख शायर अहमद अजीज गाजीपुरी,अकरम जौनपुरी,नासिर, मोनीस,डां प्रमोद वाचस्पति,शाजिद अलीम को साल भेट किया गया। वही शायरों के कलाम की खूब चर्चा रही।

ष्ना नफरतों मे ठेलों और ना फसादी बनों, अगर समाज है प्यारा समाजवादी बनों

देश वासियों से जो भी कहा मुलायम ने वादये वफा पुरा वो किया मुलायम ने सन उनतालीस में उतरा था आसमान से तारा, सैफई की पावन धरती का था वह राज दुलारा, नाम मुलायम आज भी अहमद राजनीति पर भारी नेताजी तो अमर हो गए ऐसी खेली परीष।

वहीं नेताओं ने अपने संम्बोधन मे नेताजी के जीवनी पर चर्चा करते हुए कहा नेता जी कहते थे समाजवादी पार्टी ऐसा समाज बनाना चाहती हैं जो किसी की कृपा पर न रहें अपने पैरों पर खडा हो किसी के सामने उसे कभी सर और हाथ ना फैलाना पडेध और ना सर झुकना पडेध ये समाजवादी का कार्य है समाजवादी पार्टी एक आंदोलन है एक आँधी है एक सैलाब है जो इस देश के एकता अंखडता में अवरोध पैदा करेगा उसे जड़ मूड से उखाड़ फेंकने का काम करेगी उसका नाम समाजवादी पार्टी हैं । जंयती के अवसर पर मुख्य रूप से विधायक तूफानी सरोज, लल्लन प्रसाद यादव, लालबहादुर यादव, राजबहादुर यादव, राकेश मौर्या लालचंद यादव, रुक्सार अहमद, राहुल त्रिपाठी,हिरालाल विश्कर्मा,राममूर्ति सरोज राजेन्द्र टाइगर, संजय राजभर,श्रवण जयसवाल, इर्शाद मंसूरी,भगौती सरोज,अनील दूबे गामा सोनकर, सुभाष पाल,डां जंगबहादुर यादव, नन्नलाल यादव, विनय यादव,राम इकबाल, रामू मौर्या, घनश्याम यादव,प्रवीण सरोज,श्याम नरायन बिन्द,डां विनोद शर्मा अनवारुल गुड्डू,शिवजीत समाजवादी, गुड्डू सोनकर,शर्मिला यादव,शकील मंसूरी, कमालुद्दीन अंसारी तारा त्रिपाठी, सीमा खान, मालती निषाद, अन्नपूर्णा देववंशी,रूबी बिन्द, सोनी सेठ,अखिलेश यादव,संचालन निवर्तमान महासचिव अखड प्रताप यादव ने किया।।

विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया जायेगा

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। ''लोकबन्धु राजनारायण मेमोरियल इण्टर कॉलेज'' में स्व0 बाबू जगन्नाथ सिंह की स्मृति में खेल सप्ताह का आयोजन चल रहा है। आज छठवें दिन प्रागंण में दौड़, भाला फेंक, ऊँची कूद व लम्बी कूद का शुभारम्भ मुख्य अतिथि परमश्रद्धेय आचार्य पं0 अम्बेसहाय मिश्र जी (वृन्दावनधाम) द्वारा प्रातः 08रू30बजे माँ सरस्वती, स्व0 लोकबन्धु राजनाराण जी, व स्व0 बाबू जगन्नाथ सिंह की प्रतिमा पर मार्ल्यापण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि द्वारा झण्डी दिखाकर बालको की 300 मी0 रेस का प्रारम्भ कराया गया। 300 मी0 दौड़ में प्रथम स्थान आदर्श पटेल कक्षा–7, 200मी

में प्रथम स्थान विकास रावत कक्षा–5, 100 मी0 में प्रथम स्थान रवि सिंह कक्षा–2, आदित्य शर्मा कक्षा–1 प्राप्त किया। भाला फेंक में प्रथम स्थान रमित प्रजापति कक्षा–9, लम्बी कूद में प्रथम स्थान युवराज यादव कक्षा–10, ऊँची कूद में सौरभ पाल कक्षा–10 प्राप्त किया।

इस शुभ–अवसर पर विद्यालय के अध्यक्ष तेज शंकर अवस्थी ''दद्दू'', कोशाध्यक्ष महेन्द्र वर्मा , शिवकुमार सिंह (प्रबन्धक) प्रधानाचार्य मो0 सलीम, प्रमोद कुमार यादव, मोहिनी सिंह, राजीव कुमार यादव, रोमा सिंह, सुधा गोस्वामी, स्पोर्ट टीचर अमित पाल, अनिल सक्सेना, रमेश गोस्वामी तथा समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

इस खेल–सप्ताह का समापन दिनांक 24 नवम्बर 2023 को होगा। 25 नवम्बर 2023 को ''लोकबन्धु राजनारायण जी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में विद्यालय प्रागंण में सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया जायेगा। कल दिनांक 23.11.2023 दिन गुरुवार को विद्यालय प्रागंण में प्रातः 08:30 बजे से खो–खो का फाइनल मैच होगा।

भंडारा आयोजित

अयोध्या। मंगलवार को चौदह कोसी परिक्रमा के उपलक्ष्य पर विशाल भंडारे का आयोजन परिक्रमा मार्ग, शिव मंदिर, पक्का तालाब, जनौरा, पर किया गया। इस मौके पर आशीष आनंद, दर्श, वानी, विशाल, महेश, मनजीत, राजकुमार, संदीप, और दीपक सहित कई लोग उपस्थित रहे।

लखनऊ विश्वविद्यालय की छात्र ने जीती प्रतियोगिता

संवाददाता / लखनऊ। मूट कोर्ट सोसाइटी, नारायण स्कूल ऑफ लॉ, गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय, जमूहर, बिहार ने दूसरी देव मंगल मेमोरियल राष्ट्रीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता में लखनऊ विश्वविद्यालय की छात्र ने जीता श्रेष्ठ मेमोरियल। दूसरी देव मंगल मेमोरियल राष्ट्रीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय, जमूहर, बिहार के द्वारा राष्ट्रीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता का आयोजित कराया गया।

लखनऊ गुरुद्वारा प्रबंध कमेटी ने प्रधानमंत्री को भेजा ज्ञापन

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। लखनऊ गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा एक प्रेस वार्ता का आयोजन कमेटी के अध्यक्ष सरदार राजेंद्र सिंह बग्गा जी की अध्यक्षता में गुरुद्वारा सदर में किया गया।

श्री बग्गा जी ने अवगत कराया कि दो दिन पूर्व गुरुद्वारा श्री करतारपुर साहिब, पाकिस्तान के उच्च अधिकारियों एवं अन्य लोगों द्वारा मदिरापान नाच गाना डी. जे. आदि गुरुद्वारा परिसर के निकट किया गया जो की अत्यंत दुखदायी और भावनाओं को आहत करने वाला कृत्य है।

श्री हरपाल सिंह जग्गी महामंत्री

लखनऊ गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अध्यक्ष गुरुद्वारा सदर ने कहा कि गुरुद्वारा परिसर के आसपास मदिरापान नाच गाने मांस का सेवन एवं अन्य नशीले पदार्थ का सेवन सिख रहित मर्यादा के अंतर्गत सख्ती से मना है। गुरुद्वारा श्री करतारपुर साहिब श्री गुरु नानक देव जी महाराज के जीवन का आखिरी पड़ाव था व एक पवित्र स्थान है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी महाराज का प्रकाश एवं समाधि स्थल गुरुद्वारा साहिब में बना है देश–विदेश से श्रद्धालु बड़ी आस्था के साथ यहां आते हैं। पाकिस्तान के अधिकारियों का यह कुकृत्य न केवल सिखों बल्कि अन्य समाज के लोगों में भी रोष उत्पन्न कर रहा है जो भारत जैसे महान देश में साथ रहते हैं और एक दूसरे का सम्मान करते हैं।

पाकिस्तान में सिख धर्म के तिरस्कार की यह पहली घटना नहीं है, पूर्व में भी खैबर पख्तूनख्वा एवं पाकिस्तान के अन्य क्षेत्रों में ऐतिहासिक गुरुद्वारों को तोड़ा गया एवं आतंकवादी संगठनों द्वारा अल्पसंख्यक हिंदू सिख, ईसाई मतों के अनुयायियों को प्रताड़ित किया जाता रहा है ।

दिल्ली रैली के लिए प्रदेश भर में संगठित पेंशनर

संवाददाता

लखनऊ। ईपीएस–95 राष्ट्रीय संघर्ष समिति द्वारा न्यूनतम पेंशन 7500 रू महीना, डीए व मुफ्त चिकित्सा की मांग को लेकर पिछले 7 वर्षो से देशभर में आंदोलन किया जा रहा है।

हिन्दी सांध्य दैनिक देश की उपासना

स्वात्वाधिकारी में. प्रभुदयाल प्रकाशन की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित ।

सम्पादक
श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव

मो0–7007415808,9628325542,9415034002

RNI संन्दर्भ संख्या – 24 / 234 / 2019 / R-1

deshkiupasanadailynews@gmail.com

समाचार–पत्र से सम्बन्धित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायलय होगा।